खड़ीबोली हिन्दी के विविध रूप

खड़ी बोली पश्चिमी हिंदी के अंतर्गत प्रमुख बोली है। इसे 'कौरवी' भी कहा जाता है। यह नाम राहुल सांकृत्यायन द्वारा दिया गया है। खड़ी बोली नाम कैसे पड़ा यह विवाद का विषय है।

मुख्य मत प्रवाह इस प्रकार है–

1) खड़ी मूलतः 'खरी' है और इसका अर्थ है 'शुद्ध'। लोगों ने इस बोली का साहित्य में प्रयोग करते समय जब अरबी, फारसी के शब्दों को निकालकर इसे शुद्ध रूप में प्रयुक्त करने का यत्न किया तो इसे खरी बोली कहा गया जो बाद में खड़ी बोली हो गया।
2) खड़ी का अर्थ है, 'जो खड़ी हो' अर्थात पड़ी का उल्टा। पुरानी ब्रज, अवधि, पड़ी बोलियां थी अर्थात आधुनिक काल की भाषा नहीं बन सकी।
3) कामता प्रसाद गुरु के अनुसार खड़ी का अर्थ कर्कश है। यह बोली ब्रज की तुलना में कर्कश है अतः यह नाम पड़ा।
4) गिलक्रिस्ट ने खड़ी का अर्थ 'मानक' 'स्टैंडर्ड' या 'परिनिष्ठित' किया है।
5) बेली नामक विद्वान ने खड़ी का अर्थ 'प्रचलित' या 'चलती' माना।
6) इसमें 'खड़ी पाई' अधिक होने से इसे खड़ी बोली कहा गया।

आज जिसे हम हिंदी कहते है वह खड़ीबोली का ही विकसित रूप है। खड़ीबोली हिंदी के निम्न रूप पाए जाते है –

उर्दू

उर्दू शब्द तुर्की भाषा का है। उर्दू शब्द बाबर के साथ भारत में आया ऐसा हॉब्सन जाब्सन का कहना है। उस युग में उर्दू शब्द के अनेक अर्थ थे जो इस प्रकार है – खेमा, तम्बू,फौजी पडाव आदि। भारत में यह शब्द आनेपर उसका अर्थ परिवर्तित हुआ। छावनी, लश्कर या बाजार या वह बाजार जहाँ सब तरह की चीजें मिलती हो आदि अर्थ हो गया।

आक्रमणकारी मुसलमान फौजी पडावों में रहते थे और वहाँ उनका जरूरी चीजों के लिए बाजार भी होता था। इसलिए उर्दू का अर्थ बाजार भी लिया जाता है। मुगल बादशाहों के फौजी पडावों के लिए भी उर्दू शब्द का व्यवहार होता था। मुगल बादशाहों के सिक्के कभी-कभी पडावों मे ढाले जाते थे, अतएव सिक्कों पर टकसाल का नाम प्राय: 'उर्दू' लिखा' मिलता है। बाबर से लेकर शाहजहाँ तक 'उर्दू' शब्द का अर्थ शाही पड़ाव या शाही फौजी, पडाव ग्रहण किया जाता था।

प्रारंभ में उर्दू के लिए 'बाजारू भाषा' शब्द का प्रयोग होता था क्योंकि शुरू में उर्दू बाजारू भाषा ही थी साधारण जन अरबी-फ़ारसी तथा खड़ी बोली के मिले-जुले शब्दों का प्रयोग उर्दू के रूप में करते थे। आगे चलकर इसी बाजारू भाषा ने मुस्लिम शासकों का आश्रय पाया और वह साहित्यिक भाषा बनी।

प्रारंभ में उर्दू को बाजारू बोली या जन साधारण की भाषा समझे जाने के कारण हेय समझा जाता था। दक्षिण के सूफी कवियों और मुस्लिम दरबारों के कारण इसको साहित्यिक भाषा का गौरव प्राप्त हुआ।

उर्दू भाषा की उत्पात्ति किस भाषा से हुई इस प्रश्न को लेकर विद्वानों में मतभेद है। कुछ विद्वान इसकी उत्पत्ति फारसी या अरबी फारसी से मानते है। प्रो. आजाद के अनुसार उर्दू का जन्म ब्रजभाषा से हुआ है। ब्रजभाषा की कुछ बातें उर्दू में आवश्य है परंतु वे इतनी अल्पमात्रा में है की उनके आधार पर ब्रज से उर्दू का जन्म नहीं माना जा सकता। 'बेली' नामक विद्वान ने उर्दू को को लाहौरी या पंजाबी से उत्पन्न माना है। पंजाबी का भी अल्परूप उर्दू में है लेकिन इतना कम है कि उनके आधार पर पंजाबी से उर्दू ने का जन्म नहीं माना जा सकता। इसी प्रकार अनेक विद्वानों ने अपने विभिन्न मत व्यक्त किए है।

उर्दू भाषा कैसे बनी इस बात को लेकर इन्शा ने कहा कि उस समय में प्रचलित भाषा में से कुछ भाषाओं के शब्दों को परित्यक्त (त्याग कर) और उनके स्थान पर कुछ नए शब्द रखकर या कुछ हेर-फार करके उर्दू भाषा बनाई गई। बहुत सारे विद्वानों ने इसी मत की पुष्टि की है।

वस्तुतः खड़ीबोली हिंदी की तरह ही उर्दू भी मूलतः दिल्ली के आसपास की खड़ीबोली पर आधारित है। जिसमें अल्परूप पंजाबी, बागरू, ब्रज के भी मिलते है। अतः हम कह सकते है कि व्याकराणिक दृष्टि से हिन्दी- उर्दू के कुछ अपवादों को छोडकर प्रायः पूर्णतः एक है। उर्दू भाषा के उद्भव के बारे में भी विद्वानोने परस्पर विरोधी मत

दिये है। कुछ विद्वान उर्दू की शुरुआत अमीर - खुसरो के समय से मानते है। इसके साहित्य का प्रारंभ 1700 के लगभग माना जाता है।

वास्तव में देखा जाए तो उर्दू हिंदी की ही एक शैली है। मूलतः उर्दू उतनी ही प्राचीन है जितनी हिंदी। यह बात और है कि उर्दू का स्वतंत्र शैली के रूप में उद्‌भव मुसलमानों के भारत में पदार्पण के बाद हुआ और साहित्य की भाषा के रूप में उर्दू का व्यवहार 1700 के आसपास हुआ। इसके इतिहास या विकास काल को दो भागों में विभाजित किया जाता है –

1] 1800 के पूर्व

2] 1800 के बाद

प्रथम काल के महत्वपूर्ण कवि वली,आबरू, हातिम, दर्द, सौदा, मीर इत्यादि है। दूसरे काल में मेमिन, जोक, गालीब, दाग, हाली आदि है।

प्रथम काल में उर्दू भाषा ब्रज, अवधि, दक्खिनी आदि भाषाओं का प्रभाव है लेकिन बाद में इस प्रभाव से मुक्त हो गई। इधर पाकिस्तान की राष्ट्रभाषा बनने के बाद उर्दू में साहित्य रचना पाकिस्तान तथा हिंदुस्तान दोनों देशों में हो रही है।

हिंदी के व्याकरण के अनुसार ही सहज उर्दू का भी व्याकरण है। उर्दू का कोई अलग व्याकरण नहीं है। इतना ही नहीं उर्दू का छंद शास्त्र भी वही है जो हिंदी का छंद शास्त्र है।

दक्खिनी हिंदी

दक्षिणी हिंदी को हिंदी या हिंदी भी कहा जाता रहा है। मोहम्मद तुगलक ने सन 1327 इस मिशन में देवगिरी में अपनी राजधानी बनाई और देवगिरी का नाम परिवर्तन कर दौलताबाद किया। कुछ समय बाद उसने दिल्ली में राजधानी बनाने का निर्णय किया और राजधानी बदलने के साथ वहां की जनता को भी अपने साथ ले गया। इसके पश्चात में पूना, हैदराबाद में स्वतंत्र निजाम राज्य की स्थापना हुई। इसके साथ ही हैदराबाद में समय-समय पर, सैनिक, राज्य कर्मचारी, धर्म प्रचारक तथा व्यवसाय की खोज में आने वाले अन्य बहुत से लोग हिंदी भाषा भाषी थे। यद्यपि यह लोग दक्षिणी और द्रविड़ भाषाओं के मध्य रहे उनके उत्तराधिकारी आज भी भाषा को सुरक्षित बनाए रखे हैं। इसी भाषा को दक्खिनी हिंदी कहा जाता है।

क्षेत्र – इस भाषा का क्षेत्र गुजरात महाराष्ट्र और हैदराबाद में दक्षिणी हिंदी बोली जाती है। वसुधा यहां दक्षिणी बोलने वाले वही लोग हैं जो दिल्ली और पंजाब के आसपास के क्षेत्र से जाकर उपर्युक्त प्रदेशों में बस गए हैं।

विशेषताएं –

1) 'ह' का उच्चारण पंजाबी की भांति 'ऐ' होता है।
   उदाहरणार्थ – टहलता > टैलता , ठहरता > ठैरता
2) कभी-कभी दीर्घ स्वरों को ह्रस्व रूप में बोला जाता है।
   उदाहरणार्थ – आसमान > अस्मान, भीगना > भिगना
3) इस क्षेत्र में मुस्लिम जनता होने के कारण फारसी अरबी की ध्वनियाँ ज ख़ फ़ ग (बिंदु प्रधान) का प्रयोग मिलता है।
4) 'ख़' के उत्तरण का अभी अध्यक्ष होने के कारण ' क' का उच्चारण भी 'ख' करते हैं।
   उदा. – काक > खाख, तड़कना > तड़खना
5) महाप्राण व्यंजनों को अल्पप्राणीकरण करने की प्रवृत्ति भी दिखाई देती है।
   जैसे – इधर > इदर
6) अल्पप्राण से महाप्राण करने की प्रवृत्ति भी मिलती है लेकिन बहुत ही कम मात्रा में।
   उदा. उल्टा > उल्ठा, मीठा > मिट्ठा
7) हिंदी शब्द लोकेट खानपुर केवल ' नो' शेष रह जाता है।
   उदा. – चाँदनी > चाननी , गूँधना > गूनना

हिंदुस्तानी

हिंदुस्तानी का आशय है हिंदुस्तान की भाषा। यद्यपि नाम से यह भारत की भाषा का प्रतिनिधित्व करती है परंतु मूलतः इसका रूप हिंदी और उर्दू के मिश्रण से बना है। उर्दू को हिंदी की एक शैली न मानने वाले लोग उसे भाषा के रूप में फारसी के रूप में प्रतिष्ठित करते रहे और इसीलिए अंग्रेजी शासनकाल में हिंदी-उर्दू विवाद व्यापक रूप से प्रारंभ हुआ। विभाजनवादी अंग्रेजों ने इस विवाद का पूरा लाभ उठाया और हिंदू-मुस्लिम संघर्ष के प्रेरक बने। जिसके मूल में यही भाषा नीति थी। फलतः राष्ट्रीय कांग्रेस के कर्णधारोने इस विवाद के समाधान का प्रयास दिया। और एक नई जन प्रचलित भाषा को राष्ट्रीयता की प्रतिनिधि मानकर उसके प्रयोग पर बल दिया। परिनिष्ठित संस्कृत गर्भित हिंदी और फारसी बहुल उर्दू के बीच यह नई भाषा तैयार की गई। जिसका नाम हिंदुस्तानी पड़ा। इस प्रकार हिंदुस्तानी किसी क्षेत्र अथवा वर्ग की भाषा का नाम नहीं था। हिंदुस्तानी एक समझौता माध्यम के रूप में विकसित हुई। इसका इतिहास नामकरण और स्वरूप आधुनिक युग की देन है। इसके प्रवर्तक के रूप में महात्मा गांधी का नाम उल्लेखनीय है।

भाषा के संदर्भ में हिंदुस्तानी का प्रयोग सर्वप्रथम बादशाहनामा में मिलता है। इसका प्रयोग प्रारंभ में मुस्लिम साहित्यकारों ने किया था परंतु कालांतर में यह नाम छोड़ दिया और उर्दू को अपना लिया। इस प्रकार हिंदुस्तानी मूलतः फारसी प्रभावित हिंदी के लिए प्रयुक्त शब्द है।

कलकत्ता में फोर्ट विलियम कॉलेज के प्रधानाचार्य जॉन गिल क्राइस्ट ने हिंदुस्तानी का आशय खड़ी बोली बताया परंतु इस खड़ी बोली का अर्थ है 'जन प्रचलित भाषा'। जिसका प्रयोग खिचड़ी रूप में लोगों द्वारा किया जाता था। इसमें अरबी, फारसी, अंग्रेजी, फ्रेंच शब्दों की भरमार रही है।

कालांतर में महात्मा गांधी ने हिंदुस्तानी को प्रमुखता देनी प्रारंभ कर दी। हिंदी और फारसी के स्थान पर उन्होंने हिंदुस्तानी के प्रचार पर बल दिया उनके प्रभाव से कुछ साहित्य भी प्रकाश में आया। उनकी पत्र-पत्रिकाएँ हिंदुस्तानी में निकलने लगी।इसकी मुख्य विशेषता यह रही कि यह फारसी और नागरी दोनों लिपियों में लिखी जाती थी।

इस भाषा के प्रचार का उद्देश्य अंग्रेजी के स्थान पर भारतीय भाषा की प्रतिष्ठा थी और उसके लिए एक ही भाषा का विकास हो जो भारत में समान रूप में प्रचलित हो। इस नई भाषा के निर्माण के लिए किसी न किसी प्रतिष्ठित भाषा की ओर झुकाव होना आवश्यक था इसलिए उर्दू की ओर झुकाव होता है गया। 1891 की जनगणना के अनुसार स्पष्ट हुआ कि पश्चिमोत्तर प्रांतों की भाषा न हिंदी थी न उर्दू। अतः उसके नामकरण की समस्या निर्माण हुई और अंत में उसे हिंदुस्तानी नाम दिया गया – " हिमालय के जिलों की अतिरिक्त जो भाषा इन प्रांतों में सर्वत्र सामान्य रूप से बोली जाती है। उसे हिंदुस्तानी नाम से दर्ज किया गया है।" इस प्रकार हिंदुस्तानी का नामकरण हुआ।

1918 में हिंदी साहित्य सम्मेलन में गांधीजी ने कहा कि --" जो मधुरता मुझे ग्राम की हिंदी में मिली है वह न तो लखनऊ के मुसलमानों की बोली में हैं और न प्रयाग के हिंदूओं की। इस भाषा की नदी का उद्गम जनता की हिमालय में हुआ है। हिमालय से निकली हुई गंगा हमेशा बहती रहेगी। जबकि सांस्कृतिक हिंदी तथा फारसीमय हिंदी छोटी नदी की भांति है। जो छोटी सी पहाड़ी से निकलती है, सूख जाएगी और लोप हो जाएगी। हिंदी और उर्दू का संगम उतना ही सुंदर होगा जितना गंगा और जमुना का। और वह सदैव रहेगा। इस प्रकार गांधीजी हिंदुस्तानी के प्रेरक हैं।

हिंदुस्तानी का अस्तित्व संविधान बनने के पश्चात समाप्त हो गया और चुंकि यह कोई भाषा नहीं थी मात्र प्रतीकात्मक थी। अतः इसका कोई स्वरूप भी नहीं रह गया है।

हिंदी

हिंदी का मूल रूप भारतीय आर्य भाषाओं में उपलब्ध नहीं है। यह शब्द फारसीयों द्वारा प्रयुक्त हुआ है। अतः यह शब्द विदेशी है। हिंदी शब्द सिंध प्रदेश से संबंध रखता है। पांचवी या छठी शति में सिंध को हिंद यह नाम विद्वानों ने दिया।यह ध्वनि परिवर्तन का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। उदाहरणार्थ -- सप्त का हप्त

इसी प्रकार सिंध का हिंद हुआ है। हिंद के निवासियों के लिए हिंदी शब्द का प्रयोग हुआ। इकबाल नामक कवि ने लिखा है –

" हिंदी है हम वतन है हिंदोस्ता हमारा"

कालांतर में हिंदी शब्द भाषा के लिए प्रयुक्त होने लगा। हिंदी एक विस्तृत भूखंड की भाषा है। इसका प्रसार राजस्थान और पंजाब का पश्चिमी भाग, बिहार उत्तर प्रदेश से मध्य प्रदेश के मध्य तक हो गया। अतः इतने विस्तृत भागों में हिंदी बोली जाती थी। हिंदी का क्षेत्र उत्तरोत्तर विस्तार पा रहा है।

हिंदी का आविर्भाव कब हुआ इस पर विद्वानों में काफी मतभेद है। राहुल सांकृत्यायन जी हिंदी का उद्‌भव काल छठी शती में मानते हैं लेकिन आचार्य रामचंद्र शुक्ल अपभ्रंश से हिंदी का विकास मानते हैं। आज हिंदी भारत की राजभाषा है। लेकिन राष्ट्रभाषा कौन सी हो? इस पर लोगों में काफी मतभेद है। राष्ट्रभाषा का यह संघर्ष इस्लामी शासन की देन है। अलाउद्दीन खिलजी ने भारत की भाषा का विरोध किया था। उनके बाद आने वाले विदेशी शासकों ने इसे अपनाया। अर्थात उस वक्त भी राष्ट्रभाषा हिंदी थी और जब हम स्वतंत्र हो गए तब राष्ट्र की गतिशीलता को एक भाषा की आवश्यकता थी, वह हिंदी में मिली। इसलिए भारत की राष्ट्रभाषा हिंदी बनी (कानूनी तौर पर नहीं।) हिंदी राष्ट्रीय गतिशीलता का प्रतीक तो है ही साथ ही वह राष्ट्रीय चेतना की संवाहिका भी है।

जिस राष्ट्र में एक भाषा में विचार-विनिमय नहीं होता। वैचारिक अभिव्यक्ति के साधनों में भिन्नता होती है वहाँ भावात्मक एकता का प्रश्न उठता है इसीलिए हिंदी भाषा अपने राष्ट्र के राष्ट्रीय एकता, भावनिक एकता में अपना महत्व रखती है। हिंदी भाषा का प्रयोग प्रशासन से लेकर साहित्य, कला, धर्म, दर्शन और सामान्य बोलचाल के माध्यम के रूप में होने लगा। कालांतर में उसकी क्लिष्टता भी दूर हो गई। जनसामान्य भी अरबी, फारसी, संस्कृत को अपनाने के बजाय हिंदी को अपनाते थे और पूरे भारत में यह भाषा प्रचलित भी थी। इसीलिए वह राष्ट्रीय एकता के निर्माण में उपयोगी बनी।

हिंदी खड़ीबोली का पर्याय है।खड़ीबोली हिंदी देश की राजभाषा एवं राष्ट्रभाषा है। इसका प्रयोग आज शिक्षा, शासन, साहित्य आदि में हो रहा है। इसकी लिपि देवनागरी है। जब कभी हिंदी भाषा कहा जाता है तो सदैव उसका तात्पर्य खड़ीबोली से ही होता है।

संदर्भ ग्रंथ –

1) भोलानाथ तिवारी, हिंदी भाषा,किताब महलएजेंसीज पटना, संस्करण- 2002
2) देवेन्द्रनाथ शर्मा,दीप्ति शर्मा, भाषा विज्ञान की भूमिका, राधाकृष्ण प्रकाशन,दिल्ली, संस्करण 2001
3) डॉ. मिथिलेश शर्मा और अन्य भाषा के विविध रूप और संचार माध्यम,विनय प्रकाशन अहमदाबाद, संस्करण 2003